स्नातक भाग - 3 संस्कृत
पत्र - 7
दिनांक - 4.5.2020
रोहतास महिला कालेज, सासाराम.

डॉ० सावित्री सिंह,
एसोसिएट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
DATE 4.5.2020

1) चन्द्र इव उज्ज्वलः = चन्द्रोज्ज्वलः
2) समुद्र इव गम्भीरः = समुद्रगम्भीरः
3) कमलम् इव कोमलः = कमलकोमलः
4) दुग्धम् इव धवलः = दुग्धधवलः
5) शैल इव उन्नतः = शैलोन्नतः

(2) उपमित कर्मधारय — समान धर्म का प्रयोग नहीं होने पर जब व्याघ्र, वराह, चन्द्र, कुन्जर, किशलय, पल्लव आदि उपमान वाचक शब्द अपने उपमेय के साथ समस्त होते है तो उसे उपमित कर्मधारय समास कहते हैं।

1). पुरुषः व्याघ्र इव = पुरुषव्याघ्रः
2) नरः सिंहः इव = नरसिंहः
3) चरणः कमलम् इव = चरणकमलम्
4) मुखं कमलम् इव = मुखकमलम्

(3) रूपक कर्मधारय — जहाँ उपमान और उपमेय अभिन्नता का सम्बन्ध स्थापित करते हुए समस्त होते वहाँ वहाँ रूपक कर्मधारय समास होता है। उपमेय और उपमान पदों के बीच एव लगा रहता है। समस्त पद होते समय एव लुप्त हो जाता है।

1) विद्या एव धनम् = विद्याधनम्
2) यशः एव धनम् = यशोधनम्
3) मुखम् एव कमलम् = मुखकमलम्
4) शोकः एव सागरः = शोकसागरः

दिनांक 30.4.2020 से आगे

बहुव्रीहि समास

अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहि

जिस समास में अन्य पद के अर्थ की प्रधानता होती है उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। इस समास में समस्त पद योगरूढ़ अर्थात् प्रचलित अर्थ वाला होता है।

बहुव्रीहि समास के चार भेद होते हैं —
1) समानाधिकरण बहुव्रीहि समास
2) व्यधिकरण बहुव्रीहि समास – ~~out of syllabus but possible in exam~~
3) तुल्य योग या सहार्थ बहुव्रीहि समास – ~~out of syllabus~~
4) व्यतिहार बहुव्रीहि समास – ~~out of syllabus~~

1. समानाधिकरण बहुव्रीहि समास

इस समास में दोनों पदों के अधिकरण समान होते हैं। लिंग, पुरुष, वचन में भी समानता होती है। पूर्व पद विशेषण और उत्तर पद विशेष्य होता है किन्तु विशेषण-विशेष्य पद भाव को स्वीकार नहीं किया जाता है क्योंकि समस्त पद योगरूढ़ अर्थात् प्रचलित अर्थ वाला होता है। समस्त पद अन्य अप्रस्तुत पद का विशेषण होता है। विशेष्य के नहीं रहने पर भी विशेषण पद उसकी उपस्थिति को दर्शाता है।

1) लम्बम् उदरं यस्य सः = लम्बोदरः (गणेश)
2) पीतम् अम्बरं यस्य सः = पीताम्बरः (विष्णु)
3) नीलम् अम्बरं यस्य सः = नीलाम्बरः (बलराम)
4) श्वेतम् अम्बरं यस्य सः = श्वेताम्बरः (सम्प्रदाय विशेष)
5) दिक् अम्बरं यस्य सः = दिगम्बरः (")
5) दश आननानि यस्य सः = दशाननः (रावण)

Scanned by CamScanner

Note : चन्द्रोदरस्य → चन्द्रम् उदरं यस्य सः, तस्य
चक्रपाणिना → चक्रं पाणौ यस्य सः, तेन

PAGE NO.
DATE

2. व्यधिकरण बहुव्रीहि समास - इसमें दोनों पदों के अधिकरण (विभक्तियाँ) एक दूसरे से भिन्न होते हैं। इसलिए इसे व्यधिकरण बहुव्रीहि समास कहते हैं। इस समास में समस्त पद यौगरूढ़ अर्थात् प्रचलित अर्थ वाला होता है। समस्त पद होते समय पूर्व पद की विभक्ति लुप्त हो जाती है।

1) चन्द्रः शेखरे यस्य सः = चन्द्रशेखरः
2) शूलं (त्रिशूलं) पाणौ यस्य सः = शूलपाणि
3) चक्रं पाणौ यस्य सः = चक्रपाणि
4) वीणा पाणौ यस्य सः = वीणापाणि

Scanned by CamScanner